

रोम दृष्टि को स्थापित करता है - नंबर एक

एक निजी व्याख्या

Jeff Pippenger

2024-06-28

और उन दिनों दक्षिण के राजा के विरुद्ध बहुत से उठ खड़े होंगे; और तेरी प्रजा के लुटेरे भी दर्शन को स्थिर करने के लिए अपने आप को बढ़ाएँगे; परन्तु वे गिरेँगे। दानिय्येल 11:14.

ईसाई धर्म के संदर्भ में "सिद्धांत" शब्द बाइबल के स्थापित सत्यों का प्रतिनिधित्व करता है। विभिन्न स्वयं को ईसाई बताने वाले संगठनों के पास उन बातों के अलग-अलग समूह हैं जिन्हें वे "बाइबल के सिद्धांत" कहते हैं, परंतु सत्य केवल एक है। "निरपेक्ष सत्य" और "बहुलतावाद" के बीच का भेद इस समय हमारे विचार-विमर्श के दायरे से बाहर है।

तब पीलातुस ने उससे कहा, तो क्या तू राजा है? यीशु ने उत्तर दिया, तू कहता है कि मैं राजा हूँ। मैं इसी कारण जन्मा हूँ और इसी कारण संसार में आया हूँ कि मैं सत्य की गवाही दूँ। जो कोई सत्य का है, वह मेरी वाणी सुनता है। पीलातुस ने उससे कहा, सत्य क्या है? और यह कहकर वह फिर बाहर जाकर यहूदियों के पास गया और उनसे कहा, मैं उसमें कोई दोष नहीं पाता। यूहन्ना 18:37, 38.

सत्य परमेश्वर का वचन है; वही उसकी वाणी है और वही स्वयं मसीह है।

हमें स्वयं यह जानना चाहिए कि ईसाई धर्म का सार क्या है, सत्य क्या है, वह विश्वास क्या है जो हमने प्राप्त किया है, बाइबल के नियम क्या हैं—वे नियम जो हमें सर्वोच्च अधिकार से दिए गए हैं। बहुत से ऐसे लोग हैं जो बिना किसी आधार के, और विषय की सच्चाई के पर्याप्त प्रमाण के बिना ही विश्वास कर लेते हैं। यदि कोई विचार उनके पहले से बने हुए मतों से मेल खाता हुआ प्रस्तुत किया जाए, तो वे उसे स्वीकार करने के लिए तुरंत तैयार हो जाते हैं। वे कारण और परिणाम के आधार पर विचार नहीं करते; उनके विश्वास की कोई वास्तविक नींव नहीं होती, और परीक्षा के समय वे पाएँगे कि उन्होंने रेत पर निर्माण किया है।

जो मनुष्य पवित्र शास्त्र के विषय में अपनी वर्तमान अपूर्ण जानकारी से ही संतुष्ट होकर बैठ जाता है, और यह समझता है कि उसके उद्धार के लिए यही पर्याप्त है, वह घातक भ्रम में पड़ा हुआ है। बहुत से ऐसे हैं जो शास्त्र-संगत तर्कों से पूरी तरह सुसज्जित नहीं हैं, ताकि वे भूल को पहचान सकें और उन सब परंपराओं और अंधविश्वासों को, जिन्हें सत्य के रूप में लोगों पर थोप दिया गया है, अस्वीकार कर सकें। शैतान ने परमेश्वर की आराधना में अपने विचारों को मिला दिया है, ताकि वह मसीह के सुसमाचार की सरलता को भ्रष्ट कर दे। बहुत से लोग, जो वर्तमान सत्य में विश्वास का दावा करते हैं, नहीं जानते कि वह विश्वास क्या है जो एक बार पवित्र जनों को सौंपा गया था—तुम्हारे भीतर मसीह, महिमा की आशा। वे समझते हैं कि वे पुराने मील के पत्थरों की रक्षा कर रहे हैं, परंतु वे गुनगुने और उदासीन हैं। वे नहीं जानते कि प्रेम और विश्वास के वास्तविक गुणों को अपने अनुभव में किस प्रकार बुनना और उन्हें धारण करना है। वे बाइबल के गहन विद्यार्थी नहीं हैं, बल्कि आलसी और असावधान हैं। जब शास्त्र के पदों पर मतभेद उठते हैं, तो जो लोग उद्देश्यपूर्वक अध्ययन नहीं करते और अपने विश्वास के विषय में स्थिर नहीं हैं, वे सत्य से भटक जाते हैं। हमें सबके मन में यह बात दृढ़ करनी चाहिए कि वे दिव्य सत्य की मन लगाकर खोज करें, ताकि वे यह जान लें कि वे वास्तव में जानते हैं कि सत्य क्या है। कुछ लोग बहुत ज्ञान का दावा करते हैं और अपनी दशा से संतुष्ट रहते हैं, जबकि कार्य के प्रति उनके पास कोई अधिक उत्साह नहीं, परमेश्वर के प्रति, और उन आत्माओं के प्रति जिनके लिए मसीह मरा, कोई अधिक उष्ण प्रेम नहीं—मानो उन्होंने कभी परमेश्वर को जाना ही न हो। वे अपनी आत्माओं के लिए उसकी मज्जा और परिपुष्टता को आत्मसात करने के उद्देश्य से बाइबल नहीं पढ़ते। उन्हें यह अनुभव नहीं होता कि यह परमेश्वर की आवाज़ है जो उनसे बोल रही है। परंतु यदि हम उद्धार का मार्ग समझना चाहते हैं, यदि हम धार्मिकता के सूर्य की किरणों

देखना चाहते हैं, तो हमें उद्देश्यपूर्वक शास्त्रों का अध्ययन करना होगा; क्योंकि बाइबल की प्रतिज्ञाएँ और भविष्यवाणियाँ मुक्ति की दिव्य योजना पर महिमा की उजली किरणें डालती हैं, और ये महान सत्य स्पष्ट रूप से समझे नहीं जाते। The 1888 Materials, 403.

हमें यह जानना आवश्यक है कि वे सिद्धांत क्या हैं, और यह भी कि उन सत्यों को किस प्रकार प्रस्तुत करें, सिद्ध करें और उनकी रक्षा करें।

"अब हमें यह संभव नहीं लगता कि किसी को अकेले खड़ा होना पड़े; पर यदि परमेश्वर ने कभी मेरे माध्यम से कहा है, तो समय आएगा जब उसके नाम के कारण हम परिषदों के सामने और हजारों के सामने लाए जाएंगे, और हर एक को अपने विश्वास का कारण देना होगा। तब सत्य के लिए ली गई हर उस स्थिति पर सबसे कठोर आलोचना आएगी। इसलिए हमें परमेश्वर के वचन का अध्ययन करना चाहिए, ताकि हम जान सकें कि जिन सिद्धांतों का हम समर्थन करते हैं, उन्हें हम क्यों मानते हैं। हमें यहोवा के जीवित वचनों को आलोचनात्मक ढंग से परखना चाहिए।" Review and Herald, 18 दिसंबर, 1888.

"हजारों" के सामने लाए जाने के लिए यह स्पष्ट है कि अंतिम दिनों में सत्य के कुछ रक्षकों को टेलीविजन या वेब प्रसारण जैसे माध्यमों के जरिए सत्य का बचाव करने के लिए मजबूर किया जाएगा। अन्यथा हजारों लोग एक लाख चवालीस हजार द्वारा दी गई गवाही को कैसे देख सकेंगे? जिन सिद्धांतों का हम समर्थन करते हैं, वे हमारे विश्वास के आधार को परिभाषित करते हैं।

"कलीसिया के सदस्य व्यक्तिगत रूप से परखे और सिद्ध किए जाएंगे। उन्हें ऐसी परिस्थितियों में रखा जाएगा जहाँ उन्हें सत्य की गवाही देने के लिए बाध्य होना पड़ेगा। अनेक लोगों को परिषदों और न्यायालयों के सामने बोलने के लिए बुलाया जाएगा, शायद अलग-अलग और अकेले। जिस अनुभव ने इस संकट में उनकी सहायता की होती, उसे प्राप्त करने की उन्होंने उपेक्षा की है, और व्यर्थ गंवाए अवसरों तथा उपेक्षित विशेषाधिकारों के कारण उनकी आत्माएँ पश्चाताप से बोझिल हैं।" टेस्टिमोनीज़, खंड 5, 463.

परमेश्वर का वचन कभी असफल नहीं होता; इसलिए यदि हमें एक लाख चवालीस हजार में गिना जाना है, तो हमें यह जानना चाहिए कि हम क्या विश्वास करते हैं, और वह भी परमेश्वर के वचन में लिखी बातों के आधार पर। परीक्षा का समय आने से पहले, जब परमेश्वर के लोगों को अपने माने हुए सिद्धांतों का स्पष्टीकरण देने के लिए विवश किया जाएगा, परमेश्वर इस बात की अनुमति देता है कि कुछ भूलें प्रवेश करें, ताकि उसके लोग उसके वचन का समालोचनात्मक ढंग से अध्ययन करें।

परमेश्वर के लोगों के बीच विवाद या हलचल का न होना इस बात का निर्णायक प्रमाण नहीं माना जाना चाहिए कि वे स्वस्थ सिद्धांत को दृढ़ता से पकड़े हुए हैं। यह आशंका करने का कारण है कि वे सत्य और असत्य के बीच स्पष्ट भेद नहीं कर रहे हो सकते। जब शास्त्रों की जांच-पड़ताल से नए प्रश्न उत्पन्न नहीं होते, जब ऐसा कोई मतभेद नहीं उठता जो लोगों को यह सुनिश्चित करने के लिए कि उनके पास सत्य है, स्वयं बाइबल की खोज करने के लिए प्रवृत्त करे, तब जैसे प्राचीन काल में था, वैसे ही अब भी बहुत से लोग होंगे जो परंपरा से चिपके रहेंगे और जिसे वे नहीं जानते, उसी की उपासना करेंगे।

मुझे दिखाया गया है कि बहुत से लोग जो वर्तमान सत्य के ज्ञान का दावा करते हैं, वास्तव में नहीं जानते कि वे क्या मानते हैं। वे अपने विश्वास के प्रमाणों को नहीं समझते। वे वर्तमान समय के कार्य का उचित मूल्यांकन नहीं करते। जब परीक्षा का समय आएगा, तो जो लोग आज दूसरों को उपदेश दे रहे हैं, वे जब अपने अपनाए हुए मतों की जांच करेंगे, तो पाएंगे कि अनेक बातों के लिए उनके पास कोई संतोषजनक कारण नहीं है। इस प्रकार परखे जाने तक उन्हें अपनी गहरी अज्ञानता का पता नहीं था। और कलीसिया में भी बहुत से ऐसे हैं जो यह मानकर चलते हैं कि वे जो मानते हैं उसे समझते हैं; परन्तु जब तक विवाद उत्पन्न नहीं होता, वे अपनी कमजोरी को नहीं जान पाते। जब उन्हें अपने समान विश्वास रखने वालों से अलग कर दिया जाएगा और उन्हें अकेले खड़े होकर अपने विश्वास की व्याख्या करने के लिए बाध्य किया जाएगा, तब उन्हें आश्चर्य होगा यह देखकर कि जिस बात

को उन्होंने सत्य के रूप में स्वीकार किया था, उसके विषय में उनके विचार कितने भ्रमित हैं। यह निश्चित है कि हमारे बीच जीवित परमेश्वर से हटाव और मनुष्यों की ओर मुड़ाव हुआ है, और दैवीय ज्ञान के स्थान पर मानवीय ज्ञान रखा गया है।

परमेश्वर अपने लोगों को जगाएगा; यदि अन्य साधन असफल हो जाएँ, तो उनके बीच विधर्मों शिक्षाएँ आ जाएँगी, जो उन्हें छानेंगी, भूमी को गेहूँ से अलग करती हुई। प्रभु अपने वचन पर विश्वास रखने वाले सबको निद्रा से जाग उठने के लिए बुलाता है। इस समय के लिए उपयुक्त अनमोल प्रकाश आ चुका है। यह बाइबल की सच्चाई है, जो उन खतरों को दिखाती है जो हमारे ठीक सामने हैं। यह प्रकाश हमें पवित्रशास्त्र का परिश्रमपूर्वक अध्ययन करने और जिन स्थापनाओं को हम थामे हुए हैं उनका अत्यंत आलोचनात्मक परीक्षण करने के लिए प्रेरित करना चाहिए। परमेश्वर चाहता है कि सत्य के सभी पहलुओं और स्थापनाओं को प्रार्थना और उपवास के साथ पूरी तरह और धैर्यपूर्वक खोजा-परखा जाए। विश्वासियों को सत्य क्या है, इस बारे में केवल अटकलों और अस्पष्ट धारणाओं पर टिके नहीं रहना चाहिए। उनका विश्वास परमेश्वर के वचन पर दृढ़ता से स्थापित होना चाहिए, ताकि जब परीक्षा का समय आए और उन्हें अपनी आस्था का उत्तर देने के लिए परिषदों के सामने लाया जाए, तो वे अपने भीतर की आशा का कारण नम्रता और भय सहित बता सकें।

आंदोलन करो, आंदोलन करो, आंदोलन करो। दुनिया के सामने हम जो विषय प्रस्तुत करते हैं, वे हमारे लिए एक जीवंत यथार्थ होने चाहिए। यह महत्वपूर्ण है कि जिन सिद्धांतों को हम आस्था के मूलभूत अनुच्छेद मानते हैं, उनकी रक्षा करते समय हम कभी भी ऐसे तर्कों का सहारा न लें जो पूर्णतः सुदृढ़ न हों। ऐसे तर्क किसी विरोधी को चुप तो करा सकते हैं, पर वे सत्य का आदर नहीं करते। हमें ऐसे सुदृढ़ तर्क प्रस्तुत करने चाहिए, जो न केवल हमारे विरोधियों को मौन कर दें, बल्कि सबसे कठोर और सूक्ष्म जांच-पड़ताल पर भी खरे उतरें। जिन्होंने स्वयं को वाद-विवादकर्ता के रूप में प्रशिक्षित किया है, उनके साथ यह बड़ा खतरा है कि वे ईश्वर के वचन को निष्पक्षता से नहीं बरतेंगे। किसी विरोधी का सामना करते समय हमारा ईमानदार प्रयत्न यह होना चाहिए कि हम विषयों को इस प्रकार प्रस्तुत करें कि उसके मन में दृढ़ विश्वास जागे, न कि सिर्फ विश्वासियों को आश्चस्त करने का प्रयत्न करें।

"मनुष्य की बौद्धिक प्रगति चाहे जितनी भी हो, उसे एक क्षण के लिए भी यह नहीं सोचना चाहिए कि अधिक प्रकाश के लिए पवित्र शास्त्रों की गहन और निरंतर खोज की आवश्यकता नहीं है। एक समुदाय के रूप में हममें से प्रत्येक को भविष्यवाणी का विद्यार्थी होने के लिए बुलाया गया है। हमें गंभीरता से सतर्क रहना चाहिए ताकि हम उस किसी भी प्रकाश की किरण को पहचान सकें जो परमेश्वर हमें प्रस्तुत करे। हमें सत्य की पहली झलकें पकड़नी हैं; और प्रार्थनापूर्ण अध्ययन के द्वारा अधिक स्पष्ट प्रकाश प्राप्त किया जा सकता है, जिसे दूसरों के सामने रखा जा सकता है।" टेस्टिमोनीज़, खंड 5, 708.

जो "भविष्यवाणी के विद्यार्थी" अंततः एक लाख चवालीस हज़ार का हिस्सा बनेंगे, उन्हें उन सांसारिक शक्तियों से सामना होने से पहले "व्यक्तिगत रूप से परखा और सिद्ध" किया जाएगा, जो शीघ्र आने वाले रविवार कानून के संकट और उत्पीड़न को लाएँगी। विश्वासी सबसे पहले परमेश्वर द्वारा "जगाए" जाएँगे। सोई हुई कुँवारियों को उस नींद से "जगाया" जाएगा जिसमें वे विलंब के समय के दौरान पड़ गई थीं। यदि वे उस संदेश से नहीं जागेंगे जो परमेश्वर ने जुलाई 2023 से भेजे गए लेखों के माध्यम से प्रस्तुत किया है, तो परमेश्वर "विधर्मों" को उनके "बीच आ जाने" की अनुमति देगा, जिससे एक छानने की प्रक्रिया के द्वारा गेहूँ और जंगली घास के बीच का अलगाव पूरा हो जाएगा। हम अब उसी छानने की प्रक्रिया में हैं।

जो आधुनिक रोम की सही पहचान से संबंधित विवाद का अनुसरण करते आ रहे हैं, उनके लिए तीन विकल्प उपलब्ध हैं। एक विकल्प यह है कि संयुक्त राज्य अमेरिका आधुनिक रोम है; दूसरा यह कि पापाई सत्ता आधुनिक रोम है; और तीसरा विकल्प यह है कि पहले के दोनों मत गलत हैं और कोई अन्य शक्ति का प्रतिनिधित्व 'दानियेल के लोगों के लुटेरे' करते हैं, जो अपने आप को ऊँचा उठाते हैं, गिरते हैं, और दानियेल अध्याय ग्यारह की चौदहवीं आयत में दर्शन को स्थापित करते हैं।

मेरा तर्क है कि आधुनिक रोम पापाई सत्ता है या संयुक्त राज्य अमेरिका—इस प्रश्न पर असहमति को इस आंदोलन में इसलिए आने दिया गया है कि ईश्वर के लोग ईश्वर के भविष्यसूचक वचन का अध्ययन करने के लिए बाध्य हों। ईश्वर ने अपनी दया के प्रकटन के रूप में इस विवाद को उत्पन्न किया है। मेरा मानना है कि यह असहमति आधुनिक रोम के बारे में कौन सही है और कौन गलत—मात्र यह निर्धारित करने की अपेक्षा—ईश्वर के लोगों को आने वाले संकट के लिए तैयार करने से अधिक संबंध रखती है। यह असहमति ईश्वर द्वारा अनुमति दी गई और नियोजित की गई थी, ताकि जो भी देखना चाहे, वह देख सके कि ईश्वर के भविष्यसूचक वचन के विषय में उसकी अपनी व्यक्तिगत समझ अपूर्ण या गलत है। इसलिए यह विवाद ईश्वर की दया का प्रमाण है।

यह विवाद केवल तेरे लोगों के लुटेरों द्वारा प्रतिनिधित्व की गई शक्ति कौन है, इसकी पहचान तक सीमित नहीं है, बल्कि यह भी कि विवाद के दोनों पक्ष जिस रेखा पर रेखा वाली पद्धति का पालन करने का दावा करते हैं, क्या उसे सही ढंग से लागू किया जा रहा है। रेखा पर रेखा की पद्धति से जुड़े भविष्यवाणी के नियमों में विशेष भविष्यवाणी-सिद्धांत शामिल हैं, जो गेहूँ और जंगली घास की छनाई की प्रक्रिया का हिस्सा होंगे। रेखा पर रेखा की पद्धति के तीन तत्व, जिनके बारे में मेरा कहना है कि इस वर्तमान विवाद में उनका गलत अर्थ लगाया जा रहा है, ये हैं: सत्य के रूप में मसीह, अल्फा और ओमेगा के रूप में मसीह, और भविष्यवाणी का तिहरा अनुप्रयोग।

अंततः जो लोग दानियेल अध्याय 11 के पद 14 की गलत समझ अपनाए हुए हैं, उनके बारे में यह पाया जाएगा कि वे अपनी सिद्धान्तगत स्थिति को निजी व्याख्या पर आधारित कर रहे हैं।

हमारे पास भविष्यवाणी का और भी अधिक सुनिश्चित वचन है; और तुम अच्छा करते हो जो उस पर ध्यान देते हो, जैसे अंधेरी जगह में चमकने वाले दीपक पर, जब तक कि दिन न निकल आए और भोर का तारा तुम्हारे हृदयों में उदय न हो जाए। सबसे पहले यह जान लो कि पवित्रशास्त्र की कोई भी भविष्यवाणी किसी निजी व्याख्या से नहीं होती। क्योंकि भविष्यवाणी पुराने समय में मनुष्य की इच्छा से नहीं आई, परन्तु परमेश्वर के पवित्र मनुष्यों ने पवित्र आत्मा से प्रेरित होकर बातें कीं। 2 पतरस 1:19-21.

चौदहवें पद को लेकर चल रहे विवाद में, मेरी समझ के अनुसार 'व्यक्तिगत व्याख्या' का एक उदाहरण The Great Controversy में मिलता है।

जैसे-जैसे सब्त समूचे ईसाई जगत में विवाद का विशेष केंद्र बन गया है, और धार्मिक तथा लौकिक अधिकारी रविवार के पालन को लागू कराने के लिए एकजुट हो गए हैं, वैसे-वैसे जनसामान्य की माँग के आगे झुकने से एक छोटी अल्पसंख्या का लगातार इनकार उन्हें सर्वत्र घोर निंदा के पात्र बना देगा। यह कहा जाएगा कि जो थोड़े लोग कलीसिया की एक संस्था और राज्य के एक कानून के विरोध में खड़े हैं, उन्हें सहन नहीं किया जाना चाहिए; कि उनके कष्ट सहने में ही भलाई है, बजाय इसके कि पूरे राष्ट्र अराजकता और विधिहीनता में धकेल दिए जाएँ। इसी तर्क को कई शताब्दियों पहले 'लोगों के शासकों' ने मसीह के विरुद्ध प्रस्तुत किया था। 'हमारे लिये यही उचित है,' चालाक कायाफ़ा ने कहा, 'कि लोगों के लिये एक मनुष्य मरे और सारी जाति नाश न हो।' यूहन्ना 11:50। यह तर्क निर्णायक प्रतीत होगा; और अंततः चतुर्थ आज्ञा के सब्त को पवित्र मानने वालों के विरुद्ध एक आदेश जारी किया जाएगा, जो उन्हें सबसे कठोर दंड के योग्य ठहराएगा और कुछ समय बाद लोगों को उन्हें मृत्यु के घाट उतार देने की छूट देगा। पुराने संसार में रोमनवाद और नए में धर्मत्यागी प्रोटेस्टेंटवाद, उन सब के प्रति भी यही मार्ग अपनाएँगे जो सभी दैवीय आज्ञाओं का सम्मान करते हैं। द ग्रेट कॉन्ट्रोवर्सि, 615।

"क्राइस्टेंडम" विश्वभर के ईसाइयों के समुदाय या ईसाई-बहुल देशों और संस्कृतियों के सामूहिक समूह का प्रतिनिधित्व करता है। यह शब्द प्रायः दुनिया के उन भागों के लिए प्रयुक्त होता है जहाँ ईसाई धर्म प्रमुख है और जहाँ संस्कृति, कानूनों और सामाजिक मानदंडों पर उसका उल्लेखनीय प्रभाव रहा है। क्राइस्टेंडम अपने अनुयायियों, सांस्कृतिक प्रभाव और ऐतिहासिक महत्व के संदर्भ में ईसाई धर्म के वैश्विक विस्तार को समेटता है। एलेन व्हाइट सीडी-रोम में विद्यमान पुनरावृत्ति को हटाए बिना, "क्राइस्टेंडम" शब्द एक सौ छिहत्तर बार आता है। भौगोलिक दृष्टि से सिस्टर व्हाइट बताती हैं कि सामान्यतः क्राइस्टेंडम यूरोप और अमेरिका महाद्वीप का प्रतिनिधित्व करता है। सिस्टर

व्हाइट के संदर्भ में यूरोप को "पुराना विश्व" और अमेरिका को "नया विश्व" के रूप में पहचाना गया है।

परंतु मेम्ने जैसे सींगों वाला वह पशु 'पृथ्वी से ऊपर आता हुआ' देखा गया। अपने को स्थापित करने के लिए अन्य शक्तियों को उखाड़ फेंकने के बजाय, इस प्रकार जिसका प्रतिनिधित्व किया गया वह राष्ट्र ऐसे क्षेत्र में उभरना चाहिए जिस पर पहले से किसी का अधिकार न रहा हो, और वह धीरे-धीरे तथा शांतिपूर्वक विकसित होना चाहिए। तब वह पुराने संसार की भीड़भाड़ और संघर्षरत जातीयताओं के बीच—उस अशांत सागर 'लोगों, भीड़ों, राष्ट्रों और भाषाओं'—उत्पन्न नहीं हो सकता था। उसे पश्चिमी महाद्वीप में खोजना होगा।

"1798 में नई दुनिया का कौन-सा राष्ट्र शक्ति में उभर रहा था, सामर्थ्य और महानता का आश्वासन देता हुआ, और विश्व का ध्यान आकर्षित कर रहा था? इस प्रतीक का अनुप्रयोग किसी भी शंका की गुंजाइश नहीं छोड़ता। एक राष्ट्र, और केवल एक, इस भविष्यवाणी के मानदंडों पर खरा उतरता है; यह निर्विवाद रूप से संयुक्त राज्य अमेरिका की ओर संकेत करता है।" महान विवाद, 441."

जिस अनुच्छेद पर हम विचार कर रहे हैं, उसके अंतिम वाक्य का उपयोग यह सुझाने के लिए किया गया है कि "पुरानी दुनिया में रोमनवाद और नई में धर्मत्यागी प्रोटेस्टेंटवाद" इस प्रकार पहचान करता है: "पुरानी दुनिया का रोमनवाद" अंधकार युग के दौरान का पोपतंत्र है, और संयुक्त राज्य अमेरिका (धर्मत्यागी प्रोटेस्टेंटवाद) "आधुनिक रोम" है, जिसका प्रतिनिधित्व "नई में धर्मत्यागी प्रोटेस्टेंटवाद" वाक्यांश करता है। "पुराना" को अतीत का इतिहास और "नया" को आधुनिक या वर्तमान इतिहास के रूप में परिभाषित किया गया है। ऐसा अनुप्रयोग बहन व्हाइट की ईसाई-जगत तथा पुरानी और नई दुनिया दोनों के संबंध में स्थापित समझ को तोड़-मरोड़ देता है।

जो लोग वाक्य को भूत और भविष्य के इतिहास के संदर्भ में लागू करते हैं, वे सिस्टर वाइट के अभिप्रेत अर्थ के सीधे विरोध में 'एक निजी व्याख्या' ठहराते हैं। दावा यह है कि 'Old World' भूतकाल के इतिहास का प्रतिनिधित्व करता है और 'New' आधुनिक या वर्तमान इतिहास (New) का।

उद्धरण में कहा गया है, "अपनाएँगे." रोमनवाद और धर्मत्यागी प्रोटेस्टेंटवाद "उनके प्रति जो सभी ईश्वरीय विधानों का आदर करते हैं, समान मार्ग अपनाएँगे." उद्धरण में 'पुरानी दुनिया' यूरोप है और 'नई दुनिया' अमेरिकाएँ हैं। बहन वाइट सिखाती हैं कि समस्त संसार को रविवार कानून की परीक्षा का सामना करना होगा, और कि यूरोप में उत्पीड़नों में रोमनवाद अग्रणी भूमिका निभाएगा तथा अमेरिकाओं में उत्पीड़नों में धर्मत्यागी प्रोटेस्टेंटवाद अग्रणी भूमिका निभाएगा। अमेरिकाएँ और यूरोप वही हैं जिन्हें "ईसाई-जगत" कहा जाता है। रोमनवाद और धर्मत्यागी प्रोटेस्टेंटवाद दोनों "उनके प्रति जो सभी ईश्वरीय विधानों का आदर करते हैं, समान मार्ग अपनाएँगे."

"Will pursue" दोनों शक्तियों द्वारा होने वाली एक भविष्य क्रिया का संकेत करता है, और व्याकरण की दृष्टि से यह सुझाव देना असंभव है कि पुरानी दुनिया का रोमनवाद अंधकार युग की पापीय सत्ता है। दोनों शक्तियों द्वारा किया जाने वाला उत्पीड़न भविष्यकाल में है। वाक्यांश की परिभाषा "will pursue" है, और इसका अर्थ है किसी चीज़ का अनुसरण करना या उसका पीछा करना, उसे प्राप्त या हासिल करने के इरादे से। यह एक भविष्य की क्रिया का संकेत देता है, जिसमें कोई व्यक्ति या समूह किसी लक्ष्य या उद्देश्य को सक्रिय रूप से प्राप्त करने के लिए प्रतिबद्ध होता है।

इस वाक्यांश का उपयोग विभिन्न संदर्भों में किया जा सकता है: "वह चिकित्सा के क्षेत्र में करियर बनाएगी," अर्थात् वह एक चिकित्सा पेशेवर बनने की दिशा में काम करने की योजना बनाती है। "वह इंजीनियरिंग में डिग्री हासिल करेगा," अर्थात् उसका इरादा किसी उच्च शिक्षण संस्थान में इंजीनियरिंग पढ़ने का है। "टीम परियोजना को पूरा होने तक आगे बढ़ाएगी," यह दर्शाता है कि टीम उसके पूरा होने तक परियोजना पर काम जारी रखेगी। "वे कंपनी के खिलाफ कानूनी कार्रवाई करेंगे," अर्थात् वे किसी शिकायत का समाधान करने या न्याय पाने के लिए कानूनी कदम उठाने का इरादा रखते हैं। समग्र रूप से, "will pursue" भविष्य में किसी विशिष्ट लक्ष्य या परिणाम को हासिल करने की स्पष्ट मंशा, दृढ़ता और प्रतिबद्धता को व्यक्त करता है।

वह निजी व्याख्या, जिसका उपयोग यह सिखाने के लिए किया जाता है कि पुरानी दुनिया का रोमनवाद अतीत की बात है, बाद में भविष्यवाणी के तिहरे अनुप्रयोग के एक गलत उपयोग के समर्थन के लिए एक आधार के रूप में प्रयोग की जाती है। यह तर्क देती है कि रोम का तिहरा अनुप्रयोग मूर्तिपूजक रोम, उसके बाद पापाई रोम, और फिर तीन रोमों में तीसरे के रूप में संयुक्त राज्य का प्रतिनिधित्व करता है। 11 सितम्बर 2001 के तुरंत बाद भी एक बहुत ही समान त्रुटिपूर्ण अनुप्रयोग अपनाया गया, जब योएल की पुस्तक को लेकर एक समूह आंदोलन से अलग हो गया।

फिर विवाद कनाडा में एक शिविर-सभा में शुरू हुआ, जहाँ तीन 'हाय' के त्रिगुणीय अनुप्रयोग को योएल की पुस्तक में समाहित करके यह सिखाया गया कि तीसरे 'हाय' का इस्लाम वही राष्ट्र है जो पहले अध्याय की छठी आयत में देश के विरुद्ध आता है। वह राष्ट्र पापाई रोम है, परन्तु एक निजी व्याख्या प्रस्तुत की गई जिसने दावा किया कि वह राष्ट्र इस्लाम है। तीन 'हाय' के त्रिगुणीय अनुप्रयोग ने इस्लाम को 11 सितंबर, 2001 की घटनाओं के संदर्भ में प्रभावी शक्ति के रूप में स्थापित कर दिया था, और नई निजी व्याख्या इस बात पर अड़ी रही कि योएल अध्याय एक की पापाई शक्ति वस्तुतः इस्लाम ही है। योएल की पुस्तक में पापाई शक्ति की सही पहचान को अस्वीकार करने वाली एक निजी व्याख्या को तीन 'हाय' के गलत अनुप्रयोग से सहारा दिया गया। अब एक निजी व्याख्या प्रस्तुत की जा रही है जो पापाई शक्ति को अलग रखकर उसके स्थान पर संयुक्त राज्य अमेरिका को रखती है।

जो कुछ हो चुका है, वही फिर होगा; और जो किया जा चुका है, वही फिर किया जाएगा; सूर्य के नीचे कोई नई बात नहीं है। क्या ऐसी कोई वस्तु है जिसके विषय में कहा जाए, 'देखो, यह नई है'? वह तो बहुत पहले से ही हो चुकी है, जो हमसे पहले थी। सभोपदेशक 1:9, 10.

अंतिम दिनों के विवादों में पुराने विवादों की पुनरावृत्ति भी शामिल है, और दानीएल का ग्यारहवाँ अध्याय उस विवाद को समाहित करता है जिसमें उरियाह स्मिथ ने "उत्तर के राजा" के प्रतीक पर अपनी निजी व्याख्या थोप दी। ऐसा करते हुए उसने दानीएल के ग्यारहवें अध्याय की ऐसी समझ गढ़ी जिसने केवल अंधकार ही उत्पन्न किया। इन अंतिम दिनों में जो विवाद दोहराए जा रहे हैं, वे विशेष रूप से स्थापित सत्य पर निजी व्याख्याएँ लागू करने के फल की पहचान करवा रहे हैं। यही कार्य स्मिथ ने अपनी पुस्तक "Daniel and the Revelation" में किया। यही बात योएल की पुस्तक से संबंधित विवाद में भी की गई, और वही गतिशीलताएँ तब लागू की जा रही हैं जब "The Great Controversy" के एक अनुच्छेद के आधार पर "Christendom" क्या प्रतिनिधित्व करता है, इस विषय में संसार में प्रचलित परिभाषा और एलेन व्हाइट की रचनाओं में दी गई परिभाषा से बचा जाता है, और साथ ही व्याकरण के बुनियादी नियमों को अस्वीकार किया जाता है जो बताते हैं कि "will pursue" वाक्यांश भविष्य की घटना का संकेत करता है। उस संदर्भ बिंदु से, यह त्रुटिपूर्ण अवधारणा कि "Old World" 538 से 1798 तक पापाई शक्ति का इतिहास है, फिर भविष्यवाणी के त्रिगुण अनुप्रयोग की परिभाषा की स्थापित समझ के विरुद्ध तर्क देने के लिए उपयोग की जाती है।

भविष्यवाणी के इतिहास में परमेश्वर ने जो कुछ अतीत में पूरा होने के लिए निर्धारित किया था, वह पूरा हो चुका है; और जो कुछ आगे अपने क्रम में आना बाकी है, वह भी होगा। परमेश्वर के भविष्यद्वक्ता दानियेल अपने स्थान पर खड़ा है। यूहन्ना अपने स्थान पर खड़ा है। प्रकाशितवाक्य में यहूदा के गोत्र के सिंह ने भविष्यवाणी के विद्यार्थियों के लिए दानियेल की पुस्तक खोल दी है, और इस रीति से दानियेल अपने स्थान पर खड़ा है। वह वही साक्ष्य देता है, जो प्रभु ने उसे उन महान और गंभीर घटनाओं के दर्शन में प्रकट किया, जिन्हें हमें जानना चाहिए, क्योंकि हम ठीक उनकी पूर्ति की दहलीज पर खड़े हैं।

"इतिहास और भविष्यवाणी में परमेश्वर का वचन सत्य और त्रुटि के बीच लंबे समय से जारी संघर्ष को चित्रित करता है। वह संघर्ष अभी भी जारी है। जो बातें हो चुकी हैं, वे फिर दोहराई जाएँगी। पुराने विवाद फिर उभरेंगे, और नए सिद्धांत निरंतर उभरते रहेंगे। परंतु परमेश्वर के लोग, जिन्होंने अपने विश्वास और भविष्यवाणी की पूर्ति में पहले, दूसरे और तीसरे स्वर्गदूतों के संदेशों की घोषणा में भाग लिया है, जानते हैं कि वे कहाँ खड़े हैं। उनके पास ऐसा अनुभव है जो खरे सोने से भी अधिक बहुमूल्य है। उन्हें चट्टान के समान दृढ़ बने रहना है, अपने विश्वास की प्रारंभिक दृढ़ता को अंत तक अटल पकड़े हुए।" चयनित संदेश, पुस्तक 2, 109.

यह आसानी से सिद्ध किया जा सकता है कि सिस्टर व्हाइट पौलुस की 'उनके विश्वास की शुरुआत' को एडवेंटिज़्म के बुनियादी सत्यों के रूप में पहचानती हैं। मिलेराइट्स ने सिखाया कि 'तेरे लोगों के लुटेरे' पापाई शक्ति थी, और 1989 से आगे, एक लाख चवालीस हजार का आंदोलन बार-बार उसी प्रतीक की वही समझ की पहचान करता आया है, जैसी मिलेराइट्स ने की थी। अब 'तेरे लोगों के लुटेरे' कौन हैं, इस पर एक 'नया सिद्धांत' है, और इसने एक पुराने विवाद को पुनर्जीवित कर दिया है, क्योंकि यह एक स्थापित भविष्यसूचक प्रतीक की गलत पहचान का उपयोग करके ऐसा भविष्यसूचक मॉडल बनाता है जो रेत पर खड़ा किया गया है। चाहे वह स्मिथ की निजी व्याख्या हो, या योएल के पहले अध्याय में 'राष्ट्र' का गलत अनुप्रयोग, या संयुक्त राज्य अमेरिका की पहचान आधुनिक रोम के रूप में; ये तीनों भ्रांतियाँ अंतिम दिनों में पापाई रोम की सही समझ पर आघात करती हैं, और ऐसा करते हुए उस प्रतीक पर भी चोट पहुँचाती हैं जो उस भविष्यसूचक दर्शन की स्थापना करता है जो यह निर्धारित करता है कि परमेश्वर की प्रजा नाश होती है या जीवित रहती है।

भविष्य में यूरोप में रोमनवाद और अमेरिकी महाद्वीपों में धर्मत्यागी प्रोटेस्टेंटवाद, जैसा कि पूरे पवित्र इतिहास में होता आया है, विश्रामदिन का पालन करने वालों का उत्पीड़न "आगे बढ़ाएँगे"।

परमेश्वर अपनी प्रजा को जगाएगा; यदि अन्य उपाय असफल हो जाएँ, तो उनके बीच विधर्म आ जाएंगे, जो उन्हें छानकर भूसी को गेहूँ से अलग कर देंगे। प्रभु अपने वचन पर विश्वास करने वाले सब लोगों को निद्रा से जागने के लिए बुलाता है। अनमोल ज्योति आ चुकी है, जो इस समय के लिए उपयुक्त है। यह बाइबल का सत्य है, जो उन संकटों को दिखाता है जो हमारे ऊपर आ पड़े हैं। यह प्रकाश हमें पवित्र शास्त्रों का लगन से अध्ययन करने और जिन धारणाओं को हम मानते हैं, उनकी अत्यंत आलोचनात्मक परीक्षा करने के लिए प्रेरित करना चाहिए। परमेश्वर चाहता है कि सत्य के सभी पहलुओं और सिद्धांतों का प्रार्थना और उपवास के साथ पूरी तरह और धैर्यपूर्वक अन्वेषण किया जाए। विश्वासियों को इस बारे में कि सत्य क्या है, केवल अनुमानों और अस्पष्ट धारणाओं पर संतुष्ट होकर नहीं बैठना चाहिए। गॉस्पेल वर्कर्स, 299.

हम इन विचारों को अगले लेख में जारी रखेंगे।